जीवन मूल्य और जीवन मूल्यों में परिवर्तन

डॉ॰ प्रमोद परदेशी
दादा पाटील महाविद्यालय, कर्जत (अहमदनगर) महा॰

'मूल्य' शब्द संस्कृत के मूल धातु में 'यत' प्रत्यय लगाने से बना है, जिसका अर्थ कीमत, मजदूरी होता है।[1] हिंदी विश्वकोश के अनुसारमूल्य किसी वस्तु के बदले में मिलनेवाली कीमत (धन) के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।[2] मूल्य शब्द अँग्रेजी भाषा के Value शब्द का पर्याय है। Value शब्द लैटिन भाषा के Valuer से बना है, जिसका अर्थ अच्छा, सुंदर well होता है। मूल्य शब्द के अर्थ में शिवम और सुंदरम निहित रहते हैं।[3]

संस्कृत व्याकरण के आधार पार मूल्य शब्द का अर्थ मूलेन 'समोमूल्य' अर्थात् मूल के समान।[4] 'मूल्य' मूलत: अर्थशास्त्र और वाणिज्यशास्त्र का शब्द है। अर्थशास्त्र में मानव की किसी वस्तु की अभिलाषा या इच्छापूर्ति के बदले धन त्याग की तत्परता से उसका मूल्य निर्धारित होता है। अत: मूल्य किसी वस्तु के प्रति मनुष्य के आकर्षण और वस्तु के वांछनीयता का परिचायक है। दूसरे शब्दों में मूल्य किसी वस्तु की उस क्षमता पर निर्भर है, जो मनुष्य की किसी इच्छा अथवा आवश्यकता की पूर्ति करती है।[5] अर्थशास्त्र से यह शब्द साहित्य और ज्ञान-विज्ञान के अन्य क्षेत्र में प्रचलित हुआ। मूल्य का अर्थ विस्तार होकर नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक, भौतिक, आदर्शवादी, भोगवादी आदि क्षेत्रों में स्वीकृत करके व्यवहार के लिए प्रयोग होने लगा। अपनी-अपनी आवश्यकताओं, अभिरुचियों के अनुरूप मूल्य शब्द का प्रयोग भिन्न-भिन्न अर्थों के लिए किया जाने लगा। अब मूल्य मानदंड, प्रतिमान के अर्थ में अभिव्यक्त होने लगा है। प्रतिमान का कोशगत अर्थ है—उदाहरण, आदर्श, तौल, विशेष। अर्थात् प्रतिमान शब्द का प्रयोग ऐसे 'मानदंड' के अर्थ में होता है, जो साहित्य में स्थापित होता है और जिसके आधार पर हम उसकी रचना का परीक्षण कर कोई-न-कोई निर्णय लेते है।[6] मानव जीवन के कल्याण हेतु तथा मानव जीवन को समुन्नत बनाने हेतु कुछ मानदंडों का निर्धारण किया और उसी आधार पर मूल्य की अवधारणा अस्तित्व में आई। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से अर्थ विस्तार के बाद मूल्य शब्द को मानव या जीवन से जोड़ा गया, इसके विभिन्न पक्षों की चर्चा होने लगी। मानव में ही मूल्य निहित होने के कारण मानव मूल्य और जीवन मूल्य दोनों को एक ही अर्थ का द्योतक मान लिया गया। इसलिए मानवी जीवन को मूल्यवान बनाने की क्षमता रखनेवाले गुणों, मानदंडों को जीवन मूल्य कहा जाता है। अर्थात् मूल्य का निर्माण मानव के विकास के साथ-साथ हुआ। मानव ही मूल्यों का निर्माता और संवाहक है। मानव की आवश्यकताओं के अनुरूप मूल्य बनते और बदलते हैं।

मूल्य अपने-आपमें एक धारणा है। यह धारणाएँ कालानुरूप परिवर्तित होती हैं इसलिए मूल्य की निश्चित परिभाषा करना कठिन है। फिर भी अनेक विद्वानों ने मूल्य को पारिभाषित किया है। डॉ॰ हुकुमचंद राजपाल के अनुसार, 'ये ऐसे जीवन मूल्य हैं, जो प्रत्येक युग में रहे और जीवन इनके आधार पर आचारित होता है।'[7] डॉ॰ देवराज ने मूल्यों को आचारणीय कार्य व्यापार मानते हुए

 ISSN 0975-735X

CamScanner

कहा है, 'मूल्य मूल्य वे होते हैं जिनकी मनुष्य कामना करता है। चरम मूल्य उन वस्तुओं, स्थितियों तथा व्यापारों अथवा उन विशिष्ट पहलुओं को कहते हैं, जो मनुष्य की सार्वभौम संवेदना अवेगात्मक अर्थवत्ता देते हुए दिखाई देते हैं।'[8] डॉ॰ प्रभाकर माचवे ने मूल्यों को नीतिशास्त्रीय वैल्यू का पर्यायवाची मानते हुए कहा है, 'मानवीय क्रियाओं में, आचार-व्यवहार में अच्छाई और शिवत्व का मूल क्या है, यही नीतिशास्त्र का विषय है।'[9] डॉ॰ आनंदप्रकाश दीक्षित मूल्यों के संदर्भ में लिखते हैं कि 'मेरे लिए आदर्श या उदात्त लक्ष्य के अभाव में जिसे हम उपलब्धि के योग्य समझें, जिसे जीवन में महत्त्व दे सकें।'[10] सहस्त्रबुद्धे जी के अनुसार, 'उन्नतशील व्यक्ति एवं राष्ट्र की कुछ कसौटियाँ हैं। उन कसौटियों पर जो उतरे वही तर गए, जीवन की परीक्षा में वही उत्तीर्ण हुए और जिन्हें आवश्यक गुणांक मिल न सके, वे फिसल गए, अनुत्तीर्ण हुए। ये जो आवश्यक गुण है, इसी को श्रीमद्भागवत गीता में 'देवीसंपन्न' नाम से संबोधित किया गया है। आधुनिक परिभाषा में इन्हीं को जीवन मूल्य कहते हैं।'[11] हिंदी साहित्य कोश के अनुसार, 'मूल्य और प्रतिमान समानार्थी शब्द हैं। दोनों ही मानव निर्मित कसौटियाँ हैं, जिनके सहारे साहित्य का मूल्यांकन किया जाता है। मनुष्य के कुछ व्यक्तिगत व्यवहार होते हैं, परंतु नगर, प्रदेश, प्रांत, राष्ट्र और समाज का सदस्य होने के नाते उसे समाज के कुछ बंधनों को स्वीकार करना पड़ता है।'[12] डॉ॰ धर्मवीर भारती के अनुसार 'सार्थकता का पहलू सबसे बड़ा मानव मूल्य है।'[13] दिनकर जी का कहना है कि 'मूल्य वे मान्यता हैं जिन्हें मार्गदर्शक ज्योति मानकर सभ्यता चलती रही है।'[14] पाश्चात्य विद्वानों में एच॰एम॰ जॉन्सन के अनुसार मूल्य को एक धारणा या मान के रूप में निश्चित किया जा सकता है। यह धारणा एक सांस्कृतिक हो सकती है और व्यक्तिगत भी। उसके द्वारा उचित या अनुचित, स्वीकार्य या अस्वीकार्य, अच्छे या बुरे का शास्त्रीय विवेचन किया जाता है और नैतिकता की कसौटी पर परखा जाता है।

'Value may be defined as conception or standard, cultural or merely personal by which thing are compared and approved or disapproved relative to one another held to be relatively desirable or Undesirable, more meritorious less more less correct.'[15]

अर्बन ने मूल्यों की तीन परिभाषाएँ दी हैं। प्रथम व्याख्या के अनुसार जो मानवीय इच्छा की तुष्टि करे वही मूल्य है। 'value is that which satisfies human desire.'[16] द्वितीय परिभाषा में वे कहते हैं, 'मूल्य वह वस्तु है, जो जीवन को सदैव विकास की ओर ले जाती है और उसे सुरक्षित रखती है।'[17] तीसरी परिभाषा के अनुसार मूल्य ही अंतिम रूप से तथा लक्ष्य की दृष्टि से मूल्यवान है, जो व्यक्तियों को विकास अथवा आत्मविकास अथवा आत्मनुभूति की ओर ले जाती है।

'As anything that furthers conserves life. That along is ultimately and intrinsically valuable that lads to development of selves or to self-realization.'[18]

कलकहान मूल्य को परिभाषित करते हुए कहते हैं, 'मूल्य स्पष्ट अथवा सामुदायिक विशेषता के नाते ऐसी वांछित संकल्पना है, जो उपलब्ध लक्ष्यों, साधनों एवं साध्यों के चुनाव को प्रभावित करते हैं।

'A value is a conception explicit or implicit, distinctive of an individual or characteristic of a group of the desirable which influenced the relation from available mods and of action.'[19]

वूड्स के अनुसार, 'मूल्य दैनिक जीवन में व्यवहार को नियंत्रित करने के सामान्य सिद्धांत हैं। मूल्य केवल मानव व्यवहार की दिशा निर्धारण नहीं करते, बल्कि अपने-आपमें आदर्श और

CamScanner

उद्देश्य भी होते हैं।'[20] इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि मूल्य मानव निर्मित एक ऐसी समाज सापेक्ष धारणा है, जो मानव जीवन को नियामक बनाती है। उसमें मानव जीवन का हित समाविष्ट होता है। ये जीवन के नियामक, आदर्श एवं सर्वसम्मत सिद्धांत होते हैं, जिसे अपनाकर जीवन को सुंदर बनाया जा सकता है। मूल्य सामाजिक मान्यताओं के साथ परिवर्तित होते हैं। नए परिवेश में पुरानी मान्यताएँ अपना अस्तित्व खो देती हैं और नई मान्यताएँ जन्म लेती हैं वे ही मूल्य बन जाती हैं। उन्हीं को आदर्श मानकर मानवी व्यवहार होते हैं।

मूल्य के भेद–समाज के विभिन्न क्षेत्रों के अनुसार मूल्य भेद किए गए हैं। जैसे–सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक आदि। मूल्यों में आदर्श तत्त्व होता है, जो उचित या अनुचित पर विचार करता है। विद्वानों ने मूल्यों का वर्गीकरण इस प्रकार किया है। जे०एस० मेंकेजी के मतानुसार 'मूल्यों का वर्गीकरण साधन मूल्य और स्वत: मूल्य तथा अस्ति मूल्य और नस्ति मूल्य के रूप में किया गया है।'[21] मेंकेजी के अनुसार साधन मूल्यों को व्यक्ति तथा समाज कुछ समय के लिए स्वीकार करता है, बाद में भूल जाता है किंतु स्वत: मूल्य अपने-आपमें साध्य होते हैं। वे स्थायी जीवन मूल्य होते हैं। अर्बन जीवन मूल्यों को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत करते हैं–

(अ) **शरीर विषयक मूल्य**–शरीरात्मक मूल्य, आर्थिक मूल्य, मनोरंजनात्मक मूल्य।

(ब) **सामाजिक मूल्य**–सामाजिक मूल्य, चरित्रात्मक मूल्य।

(स) **आध्यात्मिक मूल्य**–सौंदर्यात्मक मूल्य, बौद्धिक मूल्य, धार्मिक मूल्य।[22]

शरीर विषयक जीवन मूल्यों के अंतर्गत वे मूल्य आते हैं, जो व्यक्ति के अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं। इस श्रेणी में व्यक्ति की आवश्यकताएँ, रुचि और मनोरंजन को रखा जा सकता है। सामाजिक मूल्य समाज की व्यवस्था के लिए आवश्यक हैं। तीसरे श्रेणी में जो अध्यात्मिक मूल्य आते हैं उनका संबंध मनुष्य के सौंदर्यबोध, धार्मिक तथा ईश्वरपरक चिंतन से है, जो उसके व्यक्तित्व विकास की अगली सीढ़ी है। मनुष्य केवल शारीरिक और भौतिक सुखों तक ही सीमित नहीं रहता। अध्यात्मिक मूल्य उसके व्यक्तित्व के विकास में सहायक होते हैं।

पाश्चात्य विचारक एवरेट ने अपने 'मोरल वैल्यूज' नामक ग्रंथ में मूल्यों को आठ भागों में वर्गीकृत किया है–आर्थिक मूल्य, शारीरिक मूल्य, मनोरंजन के मूल्य, साहचर्य के मूल्य, चारित्रिक, मूल्य सौंदर्यपरक मूल्य, बौद्धिक मूल्य, धार्मिक मूल्य।[23]

डॉ० रमेशचंद्र लवानिया ने मूल्यों को छ: वर्गों में विभाजित किया है–वैयक्तिक मूल्य, समष्टिक मूल्य, मनोरंजन के मूल्य, भौतिक मूल्य, नैतिक मूल्य, सौंदर्य-मूलक मूल्य।[24] लवानिया के अनुसार मानव जीवन के संदर्भ में इन छ: जीवन मूल्यों का विशेष महत्त्व है।

हिंदी के विद्वान डॉ० रमेश कुमार ने मूल्य को विभाजित करते हुए मूल्यों को कबीले के मूल्य (TribunalValues) पारिवारिक मूल्य (DomesticValues) राजनीतिक मूल्य (PoliticalValues) आदि में विभाजित करने के पश्चात मूल्यों की श्रेणी में आर्थिक मूल्य, भोगवादी मूल्य और नैतिक मूल्यों का समावेश किया।[25]

डॉ० रमेश देशमुख की दृष्टि से मूल्यों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है–शाश्वत मूल्य और परिवर्तनीय मूल्य। शाश्वत मूल्य स्थिर होते हैं, उन्हें साधन मूल्य भी कहा जाता है। शाश्वत मूल्यों में कोई परिवर्तन नहीं होता। वे हर काल और हर देश में समान रूप से स्वीकार किए जाते हैं। लेकिन कुछ मूल्य समय के साथ परिवर्तनीय होते हैं, उन्हें बदलते मूल्य कहते हैं।[26] डॉ० हुकुमचंद राजपाल मूल्यों को चार भागों में विभाजित करते हैं–भौतिक मूल्य, राजनीतिक मूल्य,

ISSN 0975-735X

CamScanner

सात्विक मूल्य, आध्यात्मिक मूल्य।[27] श्री रामलालसिंह जीवन की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर जीवन मूल्यों का वर्गीकरण इस प्रकार करते हैं–

(क) आवश्यकता के अनुसार–शारीरिक मूल्य, मानसिक, नैतिकमूल्य।

(ख) उपयोगिता के अनुसार–भौतिक मूल्य, आध्यात्मिक मूल्य।

(ग) स्थान के अनुसार–एक देशीय मूल्य, सार्वभौमिक मूल्य।

(घ) एषणा के अनुसार–लौकिक सामाजिक मूल्य, व्यक्तिगत मूल्य।

(च) विषय के अनुसार–धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक।

(छ) समय के अनुसार–संस्कृत कालीन, सर्वकालीन।[28]

जीवन मूल्यों में परिवर्तन–परिवर्तन प्रकृति का नियम है। सृष्टि के विकासक्रम में परिवर्तन का योगदान है। प्राकृतिक परिवेश में मनुष्य विभिन्न अवस्थाओं से गुजरता है। उस समय उसकी शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक स्थितियों में परिवर्तन होता है। प्रकृति प्रदत्त ज्ञानेंद्रियों के आधार पर मूल्यों की अवधारणा होती है। मूल्यों का निर्माण एक दीर्घकालीन प्रक्रिया है। मनुष्य की व्यक्तिगत धारणाएँ जब सामाजिक हो जाती हैं, तब वह मूल्य बन जाती है। वह धारणाएँ जीवन को आगे बढ़ाती हैं। जीवन को नियामक और सुरक्षित बनाती हैं, वह जीवन मूल्य कहलाती है। कुछ मूल्य स्थिर तथा शाश्वत होते हैं। इनमें कोई परिवर्तन नहीं होता। लेकिन कुछ मूल्य समय के साथ परिवर्तित होते हैं। इन परिवर्तित मूल्यों की अवधारणा के पीछे तात्कालिक स्थितियाँ और विचारधाराएँ कारण रूप में विद्यमान होती हैं। स्थितियाँ निरंतर बदलती रहती हैं। परिणामत: जीवन मूल्यों में परिवर्तन होता है और नव मूल्यों का निर्माण होता है। कभी-कभी मूल्यों का संक्रमण तथा विघटन होकर नव मूल्यों का निर्माण होता है। जीवन मूल्यों में परिवर्तन मानव के विकसित होने और सजीवता के प्रमाण माना जाता है। इस प्रकार मूल्य अवधारणा, मूल्यों का निर्माण, संक्रमण तथा विघटन और पुन: नव मूल्यों का निर्माण की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है।

निष्कर्ष–मूल्य मानव निर्मित ऐसी समाज सापेक्ष अवधारणा है, जो मानव को नियामक बनाती है। उसमें मानव जीवन का हित समविष्ट होता है। ये जीवन के नियामक, आदर्श एवं सर्वसम्मत सिद्धांत होते है, जिसे आपनाकर जीवन को सुंदर बनाया जा सकता है। मूल्य सामाजिक मान्यताओं के साथ परिवर्तित होते रहते हैं। नए परिवेश में पुरानी मान्यताएँ अपना अस्तित्व खोती है और नई मान्यताएँ जन्म लेती हैं। वे ही मूल्य बन जाती हैं। उन्हीं को आदर्श मानकर मानवी व्यवहार होते है। मूल्य मानवी जीवन को व्यापे हुए हैं। मूल्य मानवी जीवन के सभी अंगों एवं क्षेत्रों से काफी हद तक संवेदित हैं। मूल्यों का वर्गीकरण मुख्यत: दो भागों में हो सकता है–शाश्वत एवं स्थायी मूल्य और परिवर्तनीय मूल्य एवं बदलते मूल्य।

संदर्भ

1. वामन शिवराम आप्टे, संस्कृत, हिंदी कोश, पृ॰ 812
2. डॉ॰ नागेंद्र वसू, हिंदी विश्व कोश, पृ॰ 238
3. डॉ॰ मोहिनी शर्मा, हिंदी उपन्यास और जीवन मूल्य, पृ॰ 01
4. डॉ॰ रामजी तिवारी, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी काव्य समीक्षा, पृ॰ 15
5. सं॰ हेनरी, फेचर चाइल्ड, डिक्सनरी ऑफ सोशल साईंसेस, पृ॰ 331
6. डॉ॰ शोभा सूर्यवंशी, रामधारी सिंह दिनकर के साहित्य में जीवन मूल्य, पृ॰ 302

CamScanner

7. आधुनिक काव्य में नवीन जीवन मूल्य, डॉ॰ हुकुमचंद राजपाल, पृ॰ 48
8. संस्कृति का दार्शनिक विवेचन, देवराज, पृ॰ 168
9. हिंदी कोश भाग-1, डॉ॰ प्रभाकर माचवे, पृ॰ 65
10. निर्मल वर्मा के कथासाहित्य में जीवन मूल्य, डॉ॰ प्रमोद पाटिल, पृ॰ 21
11. प्र॰ग॰ सहस्त्र बुद्धे, मूल्य, भाग-1, पृ॰ 194
12. डॉ॰ प्रभाकर माचवे, सं॰ धीरेंद्र वर्मा, हिंदी साहित्य कोश भाग-1, पृ॰ 604
13. डॉ॰ प्रमोद पाटिल, निर्मल वर्मा के कथासाहित्य में जीवन मूल्य, पृ॰ 21
14. डॉ॰ छायादेवी घोरपड़े, साठोत्तरी हिंदी उपन्यासों परिवर्तित नारी जीवन मूल्य
15. H.M. Jonson, Sociology, systematic introduction, P. 49
16. W.M. Urban, Fundamental of Ethics, P. 16
17. Ibid, P.17
18. Ibid, P. 18
19. Ed Charis Morrie's of Human Values, P. 18
20. डॉ॰ रमेश देशमुख, आठवें दशक की हिंदी कहानी में जीवन मूल्य, पृ॰ 18
21. डॉ॰ हेमेंद्र कुमार पनेरी, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास मूल्य संक्रमण, पृ॰ 5
22. W.N.Urban, Fundamental of Ethics, P. 163
23. हेरज कौशिक, अमृतलाल नागर के उपन्यास, पृ॰ 51
24. रमेशचंद्र लावनिया, हिंदी कहानी में जीवन मूल्य, पृ॰ 14
25. डॉ॰ हुकुमचंद राजपाल, आधुनिक काव्य में नवीन जीवन मूल्य, पृ॰ 65
26. डॉ॰ प्रमोद पाटिल, निर्मल वर्मा के कथासाहित्य में जीवन मूल्य, पृ॰ 69
27. डॉ॰ हुकुमचंद राजपाल, आधुनिक काव्य में नवीन जीवन मूल्य, पृ॰ 86
28. रामलाल सिंह, समीक्षा दर्शन, पृ॰ 59

Mob. 8788584814, 8605426791
pramodbpardeshi@gmail.com

ISSN 0975-735X

CamScanner